नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में बदलते ग्रामीण परिवेश में रोज़गार की संभावनाएं विषय पर व्याख्यान

वर्धा, 01 अगस्त 2019: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में व्यवसाय एवं नियोजन प्रकोष्ठ की ओर से

“बदलते ग्रामीण परिवेश में रोजगार की संभावनाएं’ विषय पर व्याख्यान एवं परामर्श सत्र का आयोजन किया गया।

इस विषय का प्रवर्तन करते हुये प्रो. मनोज कुमार ने कहा कि कृषि का पुनर्जीवन समाज के पुनर्जीवन से जुड़ा है। बदलती परिस्थितियों में ग्रामीण युवाओं के सम्मुख रोजगार की चुनौती है। स्वावलंबन का मार्ग ही इस चुनौती का विकल्प है। मुख्य वक्ता गोपाल जी भैया ने वर्तमान विकास की दिशा के प्रति गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि अपनी जड़ों से दूर ले जाने वाला रास्ता विकास का सही रास्ता नहीं हो सकता है। औद्योगिक समाज के प्रति बढ़ता आकर्षण हमारे समाज के सम्मुख नई चुनौती पैदा कर रहा है। इस स्थिति में कृषि को रोजगार के रूप मे अपनाना प्रवाह के विपरीत जाने का साहस है। ऐसे साहसी प्रयोगकर्ताओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्होंने कहा कि कृषि द्वारा स्वावलंबन जल, जमीन और हरियाली के साथ सुखद जीवन जीने की परिकल्पना को साकार करता है। ग्रामीण भारत में हो रहे सरकारी प्रयोगों एवं स्वयंसेवी संगठनों के प्रयासों का संदर्भ लेते हुएउन्होंने बताया कि कृषि का परंपरागत अर्थ अब बदल चुका है। धीरे-धीरे यह नए कलेवर में विज्ञान और देशज ज्ञान के सामंजस्य से आगे बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो. कृष्ण कुमार सिंह ने कहा कि भारतीय समाज की जड़ें मूलतः ग्रामीण परिवेश में है। ग्रामीण परिवेश कि यथास्थिति को तोड़ने की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि आधुनिक शिक्षा व्यवस्था ने गांव के तरफ न देखने वाले मन का विकास किया है। हमारे गांव सुवासित सांस्कृतिक परंपरा के प्रतीक रहे हैं। इसे जीवंत बनाए रखने के लिए व्हाइट कालर जॉब को खोजने की संस्कृति को तोड़ने की आवश्यकता है। हमें इस हेतु ज्ञान केंद्रित समाज की जड़ों को ग्रामीण समाज मे स्थापित करना पड़ेगा। कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम समन्वयक डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र ने सभी सम्मानित अतिथियों एवं श्रोताओं के प्रति आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विशेष कर्तव्य अधिकारी डॉ. सुशील कुमार त्रिपाठी, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण प्रो. अवधेश शुक्ल, अधिष्ठाता, साहित्य विद्यापीठ प्रो. प्रीति सागर, डॉ. अशोक

नाथ त्रिपाठी, डॉ. धरवेश कठेरिया, डॉ. रामानुज अस्थाना, श्री समरजीत यादव, डॉ. कृष्णचन्द्र पाण्डेय, डॉ. अप्रमेय मिश्र, श्री अभिषेक, श्री कान्त, श्री कुलदीप, श्री जितेंद्र, श्री पंकज मिश्रा, श्री गौरव कुमार उपस्थित रहे।

माननीय संपादक/संवाददाता

महोदय, कृपया संलग्न समाचार को प्रकाशित कर अनुगृहीत करें।
धन्यवाद।